इकाई 25 प्रकार्य की अवधारणा - रैडक्लिफ़-ब्राउन

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य

25.1 प्रस्तावना

25.2 'प्रकार्य' की अवधारणा

- 25.2.1 संरचना और प्रकार्य
- 25.2.2 प्रकार्यात्मक एकता
- 25.2.3 "यूनोमिया" और "डिस्नोमिया"
- 25.2.4 ऐतिहासिक पद्धति तथा प्रकार्यात्मक पद्धति

25.3 रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक व्याख्या के कुछ उदाहरण

- 25.3.1 अण्डमान द्वीप समूह में आनुष्ठानिक विलाप
- 25.3.2 टोटमवाद का अध्ययन
- 25.3.3 आदिम समाजों में नातेदारी
- 25.3.4 आदिम समाजों में मामा की भूमिका

25.4 सारांश

25.5 शब्दावली

25.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपके लिए संभव होगा

- रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा प्रतिपादित 'प्रकार्य' की अवधारणा की व्याख्या करना
- रैडक्लिफ़-ब्राउन के अध्ययन से उदाहरण लेकर यह स्पष्ट करना कि उसने 'प्रकार्य' की अवधारणा का किस प्रकार उपयोग किया।

25.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई (इकाई 24) में आपने रैडक्लिफ़-ब्राउन की 'संरचना' की अवधारणा की जानकारी प्राप्त की। इस इकाई में हमने उसी से जुड़ी एक और अवधारणा - 'प्रकार्य' की अवधारणा का अध्ययन किया है। ये दोनों 'प्रकार्य' और 'संरचना' की अवधारणाएं वास्तव में एक-दूसरे से अभिन्न हैं। 'संरचना' को प्रकार्य के संदर्भ में ही समझा जा सकता है और प्रकार्य को 'संरचना' के दायरे में ही सार्थकता मिल पाती है। ये दोनों अवधारणाएं मिलकर समाजशास्त्रीय अध्ययन के 'संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक' स्वरूप का निर्माण करती हैं। इकाई 22 और 23 में आपने पढ़ा कि मलिनॉस्की ने समाज के अध्ययन के लिए प्रकार्य की अवधारणा का उपयोग किया। इस इकाई में आपको बताया गया है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने इस अवधारणा को और आगे बढ़ाया। प्रकार्य को सामाजिक संरचना के साथ जोड़कर रैडक्लिफ़-ब्राउन ने वह सैद्धांतिक विकास किया, जिसमें मलिनॉस्की को सफलता नहीं मिली थी। इस इकाई के दो भाग हैं। पहले भाग में रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा प्रतिपादित 'प्रकार्य' की अवधारणा के विभिन्न पहलुओं पर व्यवस्थित ढंग से प्रकाश डाला

जाएगा। दूसरे भाग में हमने रैडक्लिफ़-ब्राउन की कृतियों में दिए गए कुछ उदाहरणों पर विशेष ध्यान दिया है जो प्रकार्य की अवधारणा तथा 'संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक' विधि से सामाजिक विश्लेषण को स्पष्ट करते हैं।

25.2 'प्रकार्य' की अवधारणा

जैसा कि इस पाठ्यक्रम में आपने पहले पढ़ा है कि जीव विज्ञान में 'प्रकार्य' की अवधारणा का बहुत महत्व है। हर जीव की शरीर-संरचना जिन अवयवों अथवा अंगों के मेल से बनती है, वे अवयव ही शरीर को जीवित और स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एमिल दर्ख़ाइम ने सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन में इस अवधारणा का सफलतापूर्वक प्रयोग किया। उसने प्रकार्य की व्याख्या सामाजिक प्राणी की आवश्यकताओं के अर्थ में की। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने अध्ययन में 'आवश्यकताओं' के स्थान पर 'अस्तित्व की अनिवार्य स्थितियों' की शब्दावली का प्रयोग किया है। दूसरे अर्थों में उसका यह मानना है कि मानव समाजों को अपने अस्तित्व के लिए कुछ बुनियादी शर्तों को परिपूर्ण करना होगा। जिस प्रकार जीव-जंतुओं के लिए साँस लेना, खाना, मल-मूत्र त्यागना तथा प्रजनन क्रियाएं अनिवार्य है, उसी प्रकार सामाजिक संगठनों के लिए भी कुछ गतिविधियाँ नितांत आवश्यक है। रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, इन 'अस्तित्व की अनिवार्य स्थितियों' की पहचान समुचित वैज्ञानिक विधि से की जा सकती है। आइए, अब हम संरचना तथा प्रकार्य के बीच रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा बताए गए 'संबंध' की व्याख्या करें।

25.2.1 संरचना और प्रकार्य

जीवों के संदर्भ में संरचना तथा प्रकार्य की परस्पर क्या क्रिया होती है? जिस प्रक्रिया के ज़रिए जीव की संरचना कायम रहती है, उसे 'जीवन' कहते है। जीवन-प्रक्रिया में विभिन्न कोशिकाओं एवं अवयवों की गतिविधियाँ एवं पारस्परिक क्रियाएं शामिल हैं। इसका अर्थ यह है कि जीव-रचना के विभिन्न अवयवों के कार्यकलाप ही उसकी संरचना को बनाए रखने में सहायक होते हैं। यदि हमारे फेफड़े, हृदय अथवा पेट काम करना बंद कर दें तो हमारे शरीर की क्या हालत होगी? शरीर नि:शक्त हो जाएग और हमारी मृत्यु हो जाएगी। रैडक्लिफ़-ब्राउन (1971: 179) का कहना है कि 'हर जीव का जीवित रहना उसकी संरचना का प्रकार्य माना जाता है। इस प्रकार्य तथा उसकी निरंतरता के बल पर ही संरचना की निरंतरता क़ायम रहती है।'

आइए, अब हम जैविक रचना से सामाजिक जीवन की ओर बढ़ें। सामाजिक संरचना की निरंतरता सामाजिक जीवन की प्रक्रिया द्वारा क़ायम रहती है। सामाजिक जीवन में विभिन्न मनुष्यों तथा मनुष्यों के समूहों की गतिविधियाँ एवं पारस्परिक क्रियाएं शामिल होती हैं। दूसरे शब्दों में, सामाजिक जीवन वह विधि है जिससे सामाजिक संरचना का प्रकार्य होता है। किसी भी बार-बार होने वाली सामाजिक गतिविधि का प्रकार्य है - सामाजिक संरचना की निरंतरता को बनाए रखना। उदाहरण के लिए, विवाह निरंतर होने वाली सामाजिक गतिविधि है। विवाह के माध्यम से महिला और पुरुष एक-दूसरे के निकट आते हैं और उनके यौन-संबंधों को सामाजिक मान्यता मिलती है। वैवाहिक संबंध से परिवार में बच्चों का जन्म होता है, जो समाज के नए सदस्य बनते हैं। इस प्रकार, यौन-संबंधों को सामाजिक रूप देने तथा समाज को नए सदस्य प्राप्त करने का वैध उपाय प्रदान करके विवाह द्वारा सामाजिक संरचना को बनाए रखने का प्रकार्य संपन्न होता है। रैडक्लिफ़-ब्राउन (1971: 180) के शब्दों में, "इस प्रकार प्रकार्य की अवधारणा में संरचना की धारणा निहित है, जिसमें इकाइयों के संबंधों का समुच्चय, और अंगभूत अवयवों की गतिविधियों से बनी जीवन प्रक्रिया से अनुरक्षित संरचना की निरंतरता शामिल होती है।"

आइए, अब हम सामाजिक संरचना तथा प्रकार्य के परस्पर संबंधों का और आगे विश्लेषण करें। रैडक्लिफ़-ब्राउन का कहना है कि शरीर संरचना का प्रेक्षण कुछ हद तक प्रकार्य से स्वतंत्र अथवा

पृथक रूप से किया जा सकता है अर्थात् मानव कंकाल का अध्ययन हड्डियों की स्थिति, रूप, आकार आदि के संदर्भ में किया जा सकता है जिसमें उनके प्रकार्य पर कोई ध्यान न दिया जाए। किंतु मानव समाज का अध्ययन करने में 'संरचना' तथा 'प्रकार्य' को पृथक नहीं किया जा सकता।

रैडक्लिफ़-ब्राउन (1971: 181) के अनुसार, "सामाजिक संरचना के कुछ पहलुओं का जैसे कि व्यक्तियों तथा समूहों के भौगोलिक वितरण का प्रत्यक्ष प्रेक्षण किया जा सकता है। किंतु अधिकतर सामाजिक संबंध, जो अपनी समग्रता में संरचना का निर्माण करते हैं (जैसे कि पिता और पुत्र, विक्रेता और ग्राहक तथा राजा और प्रजा का संबंध) उन सामाजिक गतिविधियों में ही देखे जा सकते हैं, जिनमें इनका प्रकार्य होता है"। दूसरे शब्दों में, रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार सामाजिक आकृति विज्ञान (social morphology) या सामाजिक संरचनाओं के प्रकार, उनकी समानताओं, भिन्नताओं तथा वर्गीकरण का अध्ययन और सामाजिक शरीर विज्ञान (social physiology) या सामाजिक संरचनाओं की प्रकार्य-विधि का अध्ययन एक-दूसरे पर आश्रित है।

आइए, अब हम रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा व्यक्त एक महत्वपूर्ण विचार की चर्चा करें, जिसे सामाजिक प्रणाली की 'प्रकार्यात्मक एकता' का नाम दिया गया है। परंतु पहले बोध प्रश्न को पूरा कर लें।

बोध प्रश्न 1

i) निम्नलिखित वाक्यों को रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा पूरा कीजिए।

   क) जबकि दखाईम ने "आवश्यकताओं की बात कही, रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने अध्ययन में "....." की शब्दावली का प्रयोग किया।

   ख) रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, हर जीव का जीवित रहना उसकी ..... माना जाता है।

ii) निम्नलिखित कथन सही है अथवा ग़लत, बताइए।

   क) विवाह निजी विषय है, जिसका सामाजिक संरचना से कुछ लेना-देना नहीं है। सही/गलत

   ख) हर जीव की संरचना का प्रेक्षण उसके अंगों के प्रकार्य से पृथक करके नहीं किया जा सकता। सही/गलत

   ग) रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक आकृति विज्ञान (social morphology) तथा सामाजिक शरीर विज्ञान (social physiology) का अध्ययन एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। सही/गलत

25.2.2 प्रकार्यात्मक एकता

जैसा कि हमने ऊपर पढ़ा है सामाजिक आचरण अथवा गतिविधि के प्रकार्य का अर्थ है संपूर्ण सामाजिक प्रणाली के संचालन में उसका योगदान। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक व्यवस्था में एक प्रकार की एकता है, जिसे रैडक्लिफ़-ब्राउन ने 'प्रकार्यात्मक एकता' का नाम दिया है। इससे उसका अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जिसमें सामाजिक व्यवस्था के सभी अंग समरसता (harmony) और अनुकूलता (consistency) के साथ काम करते हैं यानी ऐसे कोई तनाव अथवा टकराव पैदा नहीं होते, जिनका समाधान अथवा नियंत्रण संभव न हो। यदि हम ब्रिटिश-पूर्व भारत का उदाहरण लें तो यह कहा जा सकता है कि सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न अंग, अर्थात् ग्राम संगठन, जाति संयुक्त परिवार आदि समरसता और अनुकूल भाव से चलते थे। वे एक-दूसरे के पूरक थे तथा सामाजिक संरचना के अस्तित्व को बनाए रखने में योग देते थे।

अभी तक हमारा अध्ययन सामाजिक संस्थाओं के सकारात्मक प्रकार्यों, जैसे कि सामाजिक संरचना

के अनुरक्षण (maintenance) में भूमिका, तक सीमित रहा है। परंतु समाज में प्रकार्यों के प्रभाव से संरचना का सदैव अनुरक्षण ही नहीं होता है, कभी-कभी ऐसे प्रकार्य भी होते हैं, जिनके प्रभाव से संरचना में विकार की संभावनाएं पैदा हो जाती है। ऐसे प्रकार्यों की 'दुष्प्रकार्य' (dysfunction) कहा जाता है। आइए, अब हम रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा प्रतिपादित दुष्प्रकार्य की संभावना का विवेचन करें।

25.2.3 'यूनोमिया' तथा 'डिस्नोमिया'

रोग विज्ञान (pathology) में आंगिक दुष्प्रकार्य की समस्या का अध्ययन किया जाता है। इसे दूसरे शब्दों में रोग कहा जाता है। जब शरीर का कोई अंग अपेक्षित ढंग से काम नहीं कर पाता तो रोग जन्म लेता है और इस पर ध्यान न दिया जाए तो मृत्यु हो सकती है। शारीरिक संरचना में ऐसे पूर्णत: सही-सही मापदंड निर्धारित किए जा सकते हैं जो रोग की पहचान करने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति के शरीर का तापमान 98.4^0 फ़ार्नहाइट से ऊपर चला जाए तो यह कहा जा सकता है कि उसे ज्वर है। यदि किसी व्यक्ति के पेट में निश्चित मात्रा से अधिक अम्ल हो गया है तो कहा जाएगा कि उसे अल्सर का रोग हो सकता है। कहने का अर्थ है कि कुछ मानदंडों अथवा नियमों के आधार पर रोग का निदान किया जा सकता है। रैडक्लिफ़-ब्राउन का कहना है कि स्वास्थ्य और रोग के इस सिद्धांत को समाज पर लागू करने का प्रयास यूनानियों ने ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में किया था। उन्होंने **यूनोमिया** (सुव्यवस्था/सामाजिक स्वास्थ्य) और **डिस्नोमिया** (अव्यवस्था/सामाजिक अस्वास्थ्य) के बीच अंतर किया था। उन्नीसवीं शताब्दी में दर्ख़ाइम ने प्रतिमानहीनता (anomie) की अवधारणा की सहायता से सामाजिक रोग विज्ञान (social pathology) को समझने की चेष्टा की। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने भी 'यूनोमिया' तथा 'डिस्नोमिया' शब्दों को अपनाया है। उसका कहना है कि समाज प्राणियों की भांति रोग अथवा मृत्यु को प्राप्त नहीं होते। वह स्वीकार करता है कि किसी भी समाज के 'स्वास्थ्य' का पता लगाने के लिए कोई निश्चित वस्तुपरक मापदंड अपना पाना संभव नहीं है, क्योंकि मानव समाज का विज्ञान अभी इतना परिपक्व नहीं हुआ है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, किसी भी समाज में यूनोमिया का अर्थ है उसके अंगों का सामंजस्य से काम करना यानी व्यवस्था की प्रकार्यात्मक एकता (functional unity) अथवा आंतरिक अनुकूलता (inner consistency) दूसरी ओर, डिस्नोमिया प्रकार्यात्मक विलगता अथवा आंतरिक प्रतिरोध की स्थिति है। डिस्नोमिया का शिकार होने वाले समाज का अंत नहीं होता। ऐसा समाज यूनोमिया अथवा सामाजिक स्वास्थ्य की नई स्थिति की ओर बढ़ने के लिए संघर्ष करता है। हो सकता है, इस प्रक्रिया में उसका संरचनात्मक स्वरूप बदल जाए।

रैडक्लिफ़-ब्राउन की राय में ये अवधारणाएं सामाजिक नृशास्त्रियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। नृशास्त्रियों को अपने अध्ययन के दौरान ऐसी जनजातियों की जानकारी मिलती है, जिनकी सामाजिक संरचना बाहरी दुनिया, खासकर पश्चिमी सत्ता, के प्रभाव से विच्छिन्न हो चुकी है।

आइए, अब हम यह जानने का प्रयास करें कि समाज, विशेषकर आदिम समाज, के अध्ययन में प्रकार्यात्मक पद्धति के इस्तेमाल के बारे में रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्या कहना है। लेकिन, पहले सोचिए और करिए 1 को तो पूरा कर लें जिससे यूनोमिया तथा डिस्नोमिया के विचार आपको स्पष्ट हो जाएं।

सोचिए और करिए 1

भारतीय समाज यूनोमिया स्थिति में है अथवा डिस्नोमिया स्थिति में? अपने विचार 500 शब्दों में निबंध के रूप में लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों के साथ अपने विचारों की तुलना कीजिए।

25.2.4 ऐतिहासिक पद्धति तथा प्रकार्यात्मक पद्धति

रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सांस्कृतिक विषयों की व्याख्या के लिए दो पद्धतियों की चर्चा की है। ये हैं: ऐतिहासिक पद्धति और प्रकार्यात्मक पद्धति। ऐतिहासिक पद्धति में किसी संस्कृति के ऐतिहासिक विकास पर ध्यान दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह पता लगाया जाता है कि वह संस्कृति अपने वर्तमान रूप में कैसे आई?

यह पद्धति उन्हीं समाजों के अध्ययन के लिए काम आ सकती है, जिनके ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है। आदिम समाजों के मामले में, जिनके बारे में कोई प्रमाण मौजूद नहीं है, यह पद्धति अनुपयुक्त सिद्ध होती है। ऐसी स्थिति में अनुमानों तथा अटकलों पर आधारित इतिहास सामने आ सकता है। इस तरह का प्रयास विशेष उपयोगी नहीं है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन का कहना है कि व्याख्या की प्रकार्यात्मक पद्धति इस धारणा पर आधारित है कि संस्कृति एक समन्वित प्रणाली (integrated system) है। संस्कृति के प्रत्येक तत्व का समाज के जीवन में अपना विशिष्ट प्रकार्य होता है। इस पद्धति में यह माना जाता है कि ऐसे कुछ सामान्य नियम हैं, जो सभी मानव समाजों में प्रचलित हैं और इन नियमों की खोज तथा परख तार्किक और वैज्ञानिक पद्धतियों से की जाती है।

ध्यान देने की बात यह है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने इन दोनों पद्धतियों को समाजशास्त्रीय अध्ययन में एक-दूसरे का पूरक माना है। उसने ऐतिहासिक पद्धति को अस्वीकार नहीं किया परंतु आदिम समाजों के अध्ययन में उसकी अपूर्णता की ओर संकेत किया है।

हमने अभी देखा कि किस तरह रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक प्रकार्य का समाज के जीवन तथा स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सामाजिक संरचना के अंगों द्वारा किए गए योगदान के रूप में सैद्धांतीकरण किया है। हमने 'प्रकार्यात्मक एकता', यूनोमिया, डिस्नोमिया और सामाजिक नृशास्त्रीय अध्ययन में प्रकार्यात्मक पद्धति के इस्तेमाल का अध्ययन किया है। आइए, अब हम यह देखें कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने समाज विशेष में स्वयं जाकर अध्ययन करने के लिए प्रकार्य के सिद्धांत का किस प्रकार इस्तेमाल किया है। इस संदर्भ में हमने रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा किए गए शोधकार्य से आपके लिए कुछ उदाहरण चुने हैं। अण्डमान द्वीप समूह के लोगों में आनुष्ठानिक विलाप की प्रथा, टोटमवाद का अध्ययन, आदिम समाजों में नातेदारी तथा मामा और भांजे के संबंधों के उदाहरण अगले भाग में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। उदाहरणों के बारे में पढ़ने से पूर्व बोध प्रश्न 2 पूरा कर लें ताकि अभी तक मिली जानकारी को दुहराया जा सकें।

बोध प्रश्न 2

i) निम्नलिखित प्रश्नों का तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए।

क) रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, समाज की प्रकार्यात्मक एकता से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

ख) रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, 'डिस्नोमिया' के प्रति समाज की प्रतिक्रिया क्या होती है?

.....

.....

.....

ii) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा ग़लत, उपयुक्त कोष्ठक पर निशान लगाइए।

क) ऐतिहासिक पद्धति आदिम समाजों के अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। सही/गलत

ख) प्रकार्यात्मक पद्धति में संस्कृति का अध्ययन अनुमान तथा अटकलों के आधार पर किया जाता है। सही/ग़लत

ग) रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, ऐतिहासिक तथा प्रकार्यात्मक दोनों पद्धतियाँ एक-दूसरे की पूर्णत: विरोधी हैं। सही/ग़लत

25.3 रैडक्लिफ़-ब्राउन के संरचनात्मक प्रकार्यवाद के कुछ उदाहरण

रैडक्लिफ़-ब्राउन केवल प्रकार्यवादी नहीं बल्कि एक संरचनात्मक प्रकार्यवादी था। इससे हमारा अभिप्राय है कि उसका अध्ययन केवल यहीं तक सीमित नहीं था कि रीति-रिवाज और सामाजिक संस्थाएं समाज के अस्तित्व को बनाए रखने की आवश्यकताएं किस तरह परिपूर्ण करती हैं। विभिन्न सामाजिक संबंधों के बीच क्या संबंध है-- इसमें भी उसकी अभिरुचि थी। रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक प्रकार्यवाद की पद्धति को कुछ उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है। इन उदाहरणों में यह देखा जा सकता है कि उसने सामाजिक संरचना और प्रकार्य की अवधारणाओं को मिला कर किस तरह समाज का अध्ययन किया है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन (1933: 230) ने अपनी पुस्तक *अण्डमान आईलैंडर्स* में लिखा है, "जिस प्रकार हर प्राणी के शरीर का प्रत्येक अंग प्राणी के सामान्य जीवन में कोई न कोई भूमिका निभाता है, उसी प्रकार हर समुदाय के सामाजिक जीवन में प्रत्येक प्रथा और विश्वास की निश्चित भूमिका रहती है।" इसी मत को ध्यान में रखते हुए अण्डमान द्वीप समूह के लोगों में आनुष्ठानिक विलाप की प्रथा के बारे में रैडक्लिफ़-ब्राउन की व्याख्या को समझा जा सकता है। इस व्याख्या को पढ़ने के बाद आपको रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक प्रकार्यवाद की अवधारणा अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

25.3.1 अण्डमान द्वीप समूह में आनुष्ठानिक विलाप

अण्डमान के रीति-रिवाजों में सामाजिक विलाप भी शामिल है। मित्रों अथवा संबंधियों के लंबे समय के उपरांत पुनर्मिलन, मृत्यु, विवाह, नामकरण संस्कार, शांति स्थापना अनुष्ठान जैसे अनेक अवसरों में अण्डमानवासी सामूहिक रूप से रोते हैं।

रैडक्लिफ़-ब्राउन की मान्यता है कि इन सभी समारोहों का उद्देश्य उस भावना की अभिव्यक्ति है, जिससे समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यक्ति के आचरण को मर्यादित करने में मदद मिलती है। इसलिए रैडक्लिफ़-ब्राउन ने इस प्रथा का अर्थ खोजने के महत्व पर बल दिया है। प्रश्न उठता है कि यह काम किस तरह किया जाए? सबसे पहले समाज के विभिन्न सदस्यों की व्याख्याओं पर विचार किया जा सकता है। इसके पश्चात् उन संदर्भों तथा स्थितियों की तुलना की जा सकती है, जिनमें प्रथा ने जन्म लिया और इस तरह उसका वास्तविक महत्व मालूम किया जा सकता है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन ने बताया कि आनुष्ठानिक विलाप उन स्थितियों में किया जाता है, जिनमें टूटे हुए अथवा बिगड़े हुए सामाजिक संबंध फिर से जोड़े जाने हैं। उदाहरण के लिए, जब लंबे समय से बिछुडे दोस्त मिलते हैं तो आनुष्ठानिक विलाप इसलिए किया जाता है कि जुदाई समाप्त हो गई है और फिर से संपर्क कायम हो जाएंगे। इसी प्रकार, मौत के समय मृतक की अंतिम बिदाई पर आनुष्ठानिक विलाप किया जाता है क्योंकि उसके बाद जीवन की गाड़ी पहले की तरह चलने लगेगी और सामान्य संबंध तथा गतिविधियां पुन: चालू हो जाएंगी।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि आनुष्ठानिक विलाप की सामाजिक जीवन में निश्चित भूमिका अथवा प्रकार्य है। आइए, अब हम यह देखें कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने कैसे आदिम समाजों में टोटमवाद के अध्ययन के महत्व को प्रकार्य की दृष्टि से तो देखा ही और साथ में उसके संरचनात्मक पक्ष को भी हमारे सामने रखा।

प्रकार्यात्मक भूमिका को समझने हेतु सोचिए और करिए 2 को पूरा करें।

सोचिये और करिए 2

अपने समुदाय में विवाह के मौक़े पर होने वाले रीति-रिवाजों को देखिए और उनकी सूची बनाइए। इनमें से दो को चुनकर दो पृष्ठों में बताइए कि उनका क्या प्रकार्यात्मक महत्व है? उनकी क्या प्रकार्य भूमिका है? यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

25.2.2 टोटमवाद का अध्ययन

जैसा कि आपने इस पाठ्यक्रम के खंड 3 (इकई 12) और खंड 5 (इकाई 19) में पढ़ा है, टोटमवाद से हमारा अर्थ है कि किस प्रकार मनुष्य अपना संबंध उस प्राकृतिक पदार्थ से जोड़ते हैं, जिसे वे अपना पूर्वज मानते हैं। कूपर (1979: 74) के शब्दों में, जब समाज विशेष में एक समूह किसी प्राकृतिक प्रजाति अथवा पदार्थ से आनुष्ठानिक संबंध स्थापित कर लेता है तो उसे टोटमवाद कहते है। दर्ख़ाइम की मान्यता है कि टोटमवाद एक जीवन शैली है, जिसमें प्रतीकवाद के माध्यम से सामूहिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ उसका आनुष्ठीकरण होता है। यह प्रतीकवाद समूह की एकता को बनाए रखने में सहायक होता है। किन्तु दर्ख़ाइम ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर नहीं दिया कि प्राकृतिक वस्तुओं को ही टोटम के रूप में क्यों चुना जाता है?

रैडक्लिफ़-ब्राउन ने इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है। ऑस्ट्रेलिया में अपने सर्वेक्षण कार्य के दौरान उसे ज्ञात हुआ कि न्यू साऊथ वेल्स की कुछ जनजातियां बहिर्जातीय विवाह (exogamous) करने वाली दो मोइटी (moieties) में बंटी हुई हैं। इनके नाम दो पक्षियों के नाम पर रखे गए। ये हैं बाज़ तथा कौआ। बाज़ मोइटी के पुरुष कौआ मोइटी की औरतों से तथा कौआ मोइटी के पुरुष बाज़ मोइटी की औरतों से विवाह करते हैं। इसी प्रकार का दो हिस्सों में विभाजन ऑस्ट्रेलिया में अन्यत्र भी देखने में आया है। ऐसे उदाहरणों में भी इन हिस्सों के नाम पक्षियों के अथवा जानवरों के जोड़ों के नाम पर रखे जाते हैं। पक्षियों अथवा पशुओं के ये जोड़े उनकी पौराणिक कथाओं में एक-दूसरे के विरोधी के रूप में चित्रित किए गए हैं। किन्तु इस विरोध के बावजूद उनमें कुछ समानताएं तथा एकरूपताएं भी पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, बाज़ तथा कौआ दोनों मांस-भक्षी पक्षी हैं। मज़े की बात यह है कि मोइटी के बीच भी भिन्नता तथा प्रतिस्पर्धा के संबंध एक साथ पाए जाते हैं। उनमें भी एक ही समय में पारस्परिक सहयोग एवं विरोध दिखाई देते हैं।

इस प्रकार, रैडक्लिफ़-ब्राउन टोटमवाद को समूह की एकता बनाए रखने वाला प्रकार्यात्मक तत्व तो मानता ही है, परंतु साथ में टोटमवाद को वह एक ऐसा तत्व भी मानता है जिससे विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक विरोध की अभिव्यक्ति भी होती है अर्थात् समाज की संरचना का भी पता लगता है। इस तरह वह टोटमवाद को प्रकार्य एवं संरचना दोनों का उदाहरण मानता है। इस उदाहरण में संरचनात्मक प्रकार्यवाद को इतने स्पष्ट रूप से दर्शाकर उसने भविष्य में किए जाने वाले शोधकार्यों के लिए एक आधारशिला तैयार की। अनेक संरचनावादी समाजशास्त्रियों ने सामाजिक प्रथाओं की रोचक व्याख्याएं प्रस्तुत करने के लिए रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा विकसित 'विरोध' की अवधारणा का अपने अध्ययनों में प्रयोग किया। इस संदर्भ में लेवी-स्ट्रॉस के शोधकार्य का उदाहरण पेश किया जा सकता है।

आइए, अब हम रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा की गयी नातेदारी की व्यवस्था के अध्ययनों की समीक्षा करें।

25.3.3 आदिम समाजों में नातेदारी

रैडक्लिफ़-ब्राउन नातेदारी व्यवस्था के अध्ययन का विशेषज्ञ माना जाता है। इस क्षेत्र में उसका काम दो कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क) रैडक्लिफ़-ब्राउन के समय से पहले नातेदारी का अध्ययन मूलत: अनुमानों तथा अटकलबाज़ियों पर आधारित था। जैसे कि आदिम जातियों में संभोग स्वच्छंदता के सिद्धांत से नातेदारी के विकास को समझना (इकाई 22 का भाग 22.2 देखिए)। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने समाज विशेष में नातेदारी की प्रणाली को उसकी समसामयिक प्रासंगिकता के संदर्भ में समझने का प्रयास किया।

ख) अधिकांश आदिम समाजों के संगठन का आधार नातेदारी प्रणाली है। अत: नातेदारी के सिद्धांतों को समझना अनिवार्य हो जाता है। इस पक्ष पर विशेष ध्यान देकर रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक नृशास्त्र के अध्येताओं को एक नया रास्ता दिखाया। यह रास्ता था-- नातेदारी प्रणाली को समसामयिक संदर्भ में समझने की कोशिश का और उसके सिद्धांतों की खोज करने का।

रैडक्लिफ़-ब्राउन विभिन्न नातेदारों के बीच नाते-व्यवहार के रूप का अध्ययन तो करता ही है, साथ में वह नातों को बताने वाली शब्दावली का अध्ययन भी करता है। इसके अतिरिक्त उसने नातेदारी की शब्दावली में वर्गात्मक व्यवस्थाओं का विवेचन भी किया। ऐसी व्यवस्थाओं में परिवार के दायरे से बाहर के नातेदारों को भी परिवार के सदस्यों के साथ वर्गीकृत कर लिया जाता है। उदाहरणार्थ, मां की बहन यानि मौसी का रिश्ता यद्यपि पैतृक परिवार के दायरे में नहीं आता किन्तु उसे मां के रूप में वगीकृत किया जाता है। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने नातेदारी की शब्दावली की वर्गात्मक व्यवस्था के तीन बुनियादी सिद्धांतों की चर्चा की है। ये हैं

क) **सहोदर समूह की एकता**: इसमें भाई तथा बहन एक-दूसरे की प्रति आत्मीयता और एकात्मता (solidarity) महसूस करते हैं और बाहरी लोग उन्हें एक इकाई मानते हैं। मौसी को भी मां कहकर पुकारा जाता है और मामा 'नर माता' (male mother) जैसा होता है।

ख) **वंश परंपरा समूह की एकता**: वंश परम्परा से अभिप्राय है एक महिला अथवा पुरुष पूर्वज से चली आई पीढ़ी दर पीढ़ी के वंशज। सहोदरों की भांति वंश पंरपरा (lineage) के सदस्यों में भी एकात्मता (solidarity) होती है और बाहरी लोग उन्हें एक इकाई मानकर चलते हैं।

ग) **पीढ़ी सिद्धांत**: ऐसा देखा गया है कि सभी नातेदारी व्यवस्थाओं में पहली पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के सदस्यों के बीच कुछ दूरी या तनाव आ जाता है। उदाहरण के लिए, जब मेरी मां मेरा लालन-पालन करती है तो वह मुझ पर अनुशासन और नियंत्रण भी रखेगी। किन्तु रैडक्लिफ़-ब्राउन हमारा ध्यान खींचता है उस पक्ष की ओर जिसमे पहली और तीसरी पीढ़ी के सदस्यों (दादा-नाना और पोता-नाती) के बीच लाड़-प्यार के मधुर संबंध दिखाई देते हैं। अनेक समाजों में यह विश्वास प्रचलित है कि सामाजिक व्यवस्था में दादा का स्थान पोता लेता है। कई समाजों की नातेदारी की शब्दावली में (जैसे हवाई प्रणाली में -- विस्तृत जानकारी के लिए शब्दावली देखिए) नातों के वर्गीकरण के लिए कुछ पीढ़ियों को मिलाने और कुछ को अलग करने के सिद्धांत को माना जाता है।

यद्यपि नातेदारी शब्दावली के अध्ययन से नातों के संचालन के तरीक़ों की बड़ी रोचक जानकारी

मिलती है, किन्तु उसका अध्ययन करने के चक्कर में रैडक्लिफ़-ब्राउन ने नातेदारी व्यवसथा से उपजने वाले सामाजिक संबंधों के अध्ययन की उपेक्षा बिल्कुल नहीं की। ये संबंध एकात्मता तथा विरोध के परिवेश में पनपते हैं। इसकी स्पष्ट झलक परिहास संबंधों में मिलती है, जिसमें रैडक्लिफ़-ब्राउन ने गहरी रुचि दिखाई। 'परिहास संबंध' से हमारा अर्थ क्या है? यह नातेदारों के बीच एक मुक्त भाव वाला मैत्रीपूर्ण संबंध है, जिसमें एक-दूसरे से मज़ाक (प्राय: कामुक भी) करने और मैत्रीपूर्ण छींटा-कशी करने की छूट होती है। जुनोद (1912-13) ने मोज़ाम्बिक की थोंगा जनजाति के अध्ययन की रिपोर्ट में नाना-धेवते के बीच परिहासपूर्ण रिश्ते का उल्लेख किया है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन ने इस संबंध पर जुनोद की अनुमानपरक व्याख्या (conjectural explanation) का खंडन करते हुए, अपना ध्यान मामा और भांजे के रिश्ते पर केन्द्रित किया (देखिए रैडक्लिफ़-ब्राउन की *स्ट्रक्चर एण्ड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसाइटीज़*, 1971 और अगला अनुभाग 25.3.3 भी)। उसने परिहासपूर्ण संबंधों की व्याख्या सामाजिक दृष्टि से अलग समझे जाने वाले समूहों के सदस्यों की बीच मैत्रीपूर्ण संबंधेां के संदर्भ में करने पर बल दिया। उसके अनुसार परिहास-सबंधों के माध्यम से उन लोगों के बीच कोमल संबंध बने रहते हैं, जो एक प्रकार से तो परस्पर जुड़े हुए हैं, किन्तु साथ ही, दूसरे प्रकार के संबंधों के कारण पृथक भी है। उदाहरण के लिए, भिन्न वंश-परंपराओं के सदस्य सामाजिक दृष्टि से एक-दूसरे से अलग माने जाते हैं। किन्तु यदि उनके सदस्यों में परस्पर विवाह हो जाएं तो वे एक-दूसरे से जुड़ भी जाते हैं। इस प्रकार, इस तरह जुड़े समूहों के बीच यदि कुछ परिहास संबंध हो तो अलगाव की दूरी कम करने का एक रास्ता मिल जाता है। इसी संदर्भ में हमें एक और रास्ता दिखता है। वह है एक-दूसरे के बीच परिहार (avoidance) या दूरी रखने का, जिसमें परिहास की जगह अत्यधिक सम्मान दिया जाता है। रैडक्लिफ़-ब्राउन के शब्दों में, "एक बार मैंने ऑस्ट्रेलिया के एक आदिम व्यक्ति से पूछा कि तुम अपनी सास से इतनी दूरी क्यों रखते हो तो उसका उत्तर था कि वह दुनिया में मेरी सबसे अच्छी मित्र है, जिसने मुझे मेरी पत्नी दी है। इस तरह दामाद तथा सास-ससुर के बीच आपसी सम्मान का संबंध एक प्रकार की मित्रता का ही द्योतक है। इसकी वजह से विरोधी हितों की टकराहट से पैदा होने वाले संघर्ष टल जाते हैं।"

परिहास तथा परिहार संबंधों को समझने हेतु सोचिए और करिए 3 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 3

अपने समाज में विद्यमान परिहास (joking) तथा परिहार (avoidance) संबंधों की सूची बनाइए।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अनुमानपरक अवधारणाओं का खंडन किया। साथ में उसने नातेदारी के ताने-बानों में सामाजिक संबंधों की संरचना और समाज को जोड़े रखने तथा तनावों को संतुलित करने की उनकी प्रक्रिया पर ध्यान देकर नातेदारी के अध्ययन को नई दिशा प्रदान की। हमने अगले अनुभाग में कुछ आदिम समाजों में मामा और भांजे के संबंधों में रैडक्लिफ़-ब्राउन की विशेष रुचि का संक्षेप में विवेचन किया है।

25.3.4 आदिम समाजों में मामा की भूमिका

पिछले अनुभागों में आपने देखा कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने किस प्रकार प्रकार्य की अवधारणा से औपचारिक विलाप की प्रथा तथा टोटमवाद में विश्वास का विश्लेषण किया। यह भी देखा कि उसने नातेदारी की व्यवस्था का अध्ययन करने में सरंचनात्मक प्रकार्यवाद का प्रयोग कैसे किया। आइए, अब हम देखें कि उसने आदिम समाजों में मामा की भूमिका का विवेचन किस प्रकार किया है। यह रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक-प्रकार्यवाद की पद्धति का उदाहरण है। पूर्वी अफ़्रीका की बथोंगा (Bathonga) जनजाति, दक्षिण अफ़्रीका की नामा होतेन्तो (Nama Hottentots)

जनजाति और टोंगा के फ्रेंडली द्वीपवासी जैसे अनेक आदिम जनसमूहों में मामा तथा भाँजे में अपेक्षाकृत अधिक हार्दिक तथा स्नेहपूर्ण संबंध पाया जाता है। भाँजा अपने मामा से अपनी बातें आसानी से मनवा लेता है और मामा अपने भाँजे का विशेष ध्यान रखता है तथा उसके बीमार पड़ने अथवा और किसी संकट में फँसने पर बड़े से बड़ा त्याग करता है। वह अपनी जायदाद का हिस्सा, कभी-कभी तो अपनी पत्नियों में से एक पत्नी तक को भाँजे के नाम कर देता है।

रैडक्लिफ़-ब्राउन का कथन है (1971: 17) " यह मानना ग़लत है कि समाज की प्रथाओं को उन अन्य प्रथाओं पर ध्यान दिए बिना समझा जा सकता है, जिनके साथ वे जुड़ी हुई हैं"। उसने मामा और भाँजे के रिश्ते के साथ जुड़े एक अन्य स्नेहपूर्ण संबंध का उल्लेख किया है। उसका कहना है (1971: 17) "अक्सर जहाँ एक ओर भाँजे-मामा का संबंध अनौपचारिक और स्वच्छंद होता है तो दूसरी ओर पिता की बहन यानि बुआ के प्रति विशेष सम्मान तथा आज्ञापालन का दायित्व होता है। बुआ/भतीजे या भतीजी का बड़ा पुनीत संबंध होता है। बुआ के कथन को क़ानून की तरह माना जाता है और उसके प्रति अनादर का भाव गहन अपराध की तरह माना जाता है"।

रैडक्लिफ़-ब्राउन का कहना है कि अधिकतर आदिम समाजों में नातेदारी ही व्यक्तियों के सामाजिक संबंधों का नियमन करती है। इन संबंधों के साथ-साथ आचरण के विभिन्न विन्यास जुड़े हुए हैं और ये निश्चित प्रकार के आचार-व्यवहार के अनुसार चलते हैं। यदि प्रत्येक संबंधी के प्रति अलग-अलग ढंग से आचरण किया जाएगा तो एक-दूसरे से व्यवहार करने की प्रक्रिया अत्यंत जटिल हो जाएगी, विशेषकर उस स्थिति में जब संबंधियों की संख्या काफ़ी अधिक हो। रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार, आदिम समाजों में इस समस्या का निदान करने के लिए वर्गीकरण की प्रणाली का सहारा लिया जाता है। अलग-अलग तरह के रिश्तेदारों की कुछ सीमित श्रेणियाँ बना ली जाती हैं। वर्गीकरण का सर्वाधिक प्रचलित मापदंड 'भाइयों की समानता' का सिद्धांत है। इसका अर्थ है कि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से जो संबंध है उसके भाई से भी वही संबंध माना जाएगा। यही बात एक स्त्री और उसकी बहन के बारे में भी कही जा सकती है। इस तर्क के आधार पर, पिता का भाई भी पिता-तुल्य माना जाता है और पिता के भाई के बेटे भाइयों की तरह होते हैं। इसी तरह, माँ की बहनें माँ-तुल्य मानी जाती है और उनके बच्चे भाई-बहन की तरह होते हैं।

नाते-रिश्तों की इस व्यवस्था में बुआ और मामा को कहां रखा जाए? जिन तीन समुदायों की ऊपर चर्चा की गई है, वे पितृसत्तात्मक (patriarchal) समुदाय है। उनमें पिता के प्रति सम्मान एवं भय का भाव रहता है तथा माता के प्रति प्रेम और स्नेह का भाव रहता है। इसी प्रवृत्ति के अनुरूप पिता की बहन के प्रति सम्मान और भक्ति का भाव तथा माता के भाई के प्रति स्नेह और प्यार का भाव रहता है। दूसरे शब्दों में बुआ एक प्रकार से 'मादा पिता (female father) तथा मामा 'नर माता' (male mother) है। यह व्याख्या **'भावनाओं का विस्तार'** (extension of sentiments) के सिद्धांत पर आधारित है। इसका भाव यह है कि माता के प्रति व्यक्त की गई भावनाएँ उसके भाई के लिए भी है और यही बात पिता की बहन के लिए कही जा सकती है।

इस प्रकार के वर्गीकरण की व्याख्या करते हुए रैडक्लिफ़-ब्राउन ने कहा है (1971: 25) 'आदिम समाज में व्यक्ति विशेष को उसके समूह के माध्यम से पहचानने की तीव्र प्रवृत्ति होती है। नातेदारी के संदर्भ में इसका परिणाम है कि मूलत: जो आचरण समूह के किसी एक विशिष्ट व्यक्ति के प्रति किया जाता है, वही समूचे समूह के प्रति किया जाने लगता है।'' मौटे तौर पर कहा जा सकता है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने आदिम समाजों में मामा की भूमिका का अध्ययन आपस में जुड़े संस्थागत संबंधों के संदर्भ में किया है। यही उसकी संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक पद्धति का सार है।

बोध प्रश्न 3

i) कॉलम 'क' में उल्लिखित बातों को कॉलम 'ख' में उल्लिखित बातों से मिलाइए:

क	ख
क) आनुष्ठानिक विलाप	i) भाई की समानता
ख) बथोंगा	ii) अण्डमान द्वीप समूह
ग) बुआ	iii) मादा पिता
घ) पिता का भाई	iv) पूर्वी अफ़्रीका

25.4 सारांश

इस इकाई में ए.आर. रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा प्रतिपादित 'प्रकार्य' की अवधारणा का विवेचन किया गया। 'संरचना' और 'प्रकार्य' के बीच संबंध, 'समाज की प्रकार्यात्मक एकता' का रैडक्लिफ़-ब्राउन का विचार तथा 'यूनोमिया' एवं 'डिस्नोमिया' की युगल अवधारणाएँ भी स्पष्ट की गई। आदिम समाज के संदर्भ में विश्लेषण की ''ऐतिहासिक'' तथा 'प्रकार्यात्मक' पद्धतियों की तुलना भी की गई।

प्रकार्य तथा प्रकार्यात्मक पद्धति को उदाहरणों के माध्यम से और अधिक स्पष्ट किया गया। आपने देखा कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने किस प्रकार अण्डमान द्वीपसमूह वासियों में 'औपचारिक विलाप' की प्रथा की व्याख्या कीं। उसने टोटमवाद की अभिव्यक्ति के रूप में संरचनात्मक संबंधों का किस तरह विश्लेषण किया। रैडक्लिफ़-ब्राउन की विशेष रुचि नातेदारी की व्यवस्था के अध्ययन में थी जिसमें उसने प्रकार्यात्मक पद्धति का विशेष रूप से उपयोग किया। इकाई के अंतिम दो अनुभागों में आदिम समाजों में नातेदारी, विशेष रूप से मामा-भाँजे के संबंधों का विश्लेषण किया गया है। इन उदाहरणों से रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक पद्धति का सार स्पष्ट हो जाता है।

25.5 शब्दावली

यूनोमिया समाज की स्वस्थ तथा अच्छी स्थिति

भावनाओं का विस्तार मामा और भाँजें के घनिष्ठ संबंधों की रैडक्लिफ़-ब्राउन की व्याख्या के संदर्भ में इसका अर्थ यह है कि जो भावनाएं माँ के लिए होती हैं, उन्हीं का उसके भाई के लिए भी विस्तरण कर दिया जाता है

डिस्नोमिया समाज की अस्वस्थ और ख़राब स्थिति

हवाई प्रणाली नातेदारी शब्दावली में भेदों के आधार पर नृशास्त्रियों द्वारा विश्व की नातेदारी प्रणालियों को पहचाना जाता है। नातेदारी प्रणालियों के छः प्रकारों में एक हवाली प्रणाली है। इसे 'पीढ़ी व्यवस्था' वाली नातेदारी ही कहा जाता है। इस व्यवस्था में, समान पीढ़ी के सारे व्यक्ति एक समूह में कर दिये जाते हैं जिनमें लिंग के आधार पर अवश्य भेद किया जाता है। उदाहरणतः अपने से ऊपर वाली पीढ़ी में पिता, पिता के भाई, माँ के भाई आदि के लिए एक ही शब्द का प्रयोग होता है। इसी तरह, माँ, माँ की बहन, पिता की बहन के लिए समान शब्द का प्रयोग होता है।

25.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

रैडक्लिफ़-ब्राउन, ए.आर., 1971. *स्ट्रक्चर एण्ड फंक्शन इन प्रीमिटिव सोसाइटीज.* कोहन एण्ड वेस्ट लिमिटेड: लंदन

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) अस्तित्व की अनिर्वाय स्थितियाँ

ख) उसकी संरचना का प्रकार्य

ii) क) ग़लत

ख) ग़लत

ग) सही

बोध प्रश्न 2

i) क) 'समाज की प्रकार्यात्मक एकता' से रैडक्लिफ़-ब्राउन का अभिप्राय उस स्थिति से है, जिसमें समाज के सभी अंग समरस होकर काम करते हैं जिससे तनाव और टकराव की संभावना कम हो जाती है।

ख) 'डिस्नोमिया' की स्थिति वाला समाज तिरोहित नहीं होता। बल्कि वह फिर से सामाजिक स्वास्थ्य अथवा यूनोमिया की स्थिति को प्राप्त करने का प्रयास करता है। हो सकता है कि इस प्रक्रिया में वह अपना स्वरूप ही बदल लें।

ii) क) ग़लत

ख) ग़लत

ग) ग़लत

बोध प्रश्न 3

i)

क	ख
अ)	ii)
ब)	iv)
स)	iii)
द)	i)